❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वेद परिवार निर्माण अभियान
50 मंत्र – 1 परिवार
वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने हेतु
9810936570 या 9911140756 पर व्हाट्सएप्प करें

वर्ष 48, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 फरवरी, 2025 से रविवार 9 फरवरी, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला : 1-9 फरवरी, 2025 | 9 फरवरी को रात्रि 8 बजे होगा समापन

समारोह पूर्वक हुआ विश्व पुस्तक मेले में आर्यसमाज के वृहद स्टाल का उद्घाटन

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं 200वीं जयन्ती पर वैचारिक क्रान्ति हेतु प्रकाशित जन-जागरण की पुस्तकों की मांग हुई तेज : सारे देश से पहुंच रहे हैं पुस्तक प्रेमी

आपके योगदान से मात्र 20/- रुपये में दिया जा रहा है 'सत्यार्थ प्रकाश'

दिल्ली और आस-पास के आर्यजन शनिवार और रविवार को हॉल नं. 2-3 में स्टाल नं. N 05 पर अवश्य पहुंचें

विश्वव्यापी आर्य समाज अपने स्थापना की 150वीं वर्षगांठ मनाने की ओर अग्रसर है और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 200वीं जयंती वर्ष भी चल रहा है। ऐसे में लगभग पिछले दो वर्षों से एक ओर आर्य समाज भव्य और प्रेरक आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न कर रहा है, जिनमें हर आयु वर्ग तथा हर स्तर के लोग आर्य सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं से परिचित हो रहे हैं, वहीं महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं के लिए वैदिक साहित्य जो कि विश्व समुदाय के लिए सदा से अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता आया है, उससे निरन्तर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस क्रम में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान नई दिल्ली में 1 से 9 फरवरी 2025 तक चलने वाले वृहद स्टाल का उद्घाटन 1 फ़रवरी 2025 को समरोह पूर्वक उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के

– शेष पृष्ठ 4 पर

आपकी एक आहुति भी कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

सत्यार्थ प्रकाश केवल 20/- रुपये में जन साधारण को प्रदान कराने के लिए अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत अमूल्य ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' आप द्वारा प्रदान की गई सब्सिडी (छूट) के साथ जनसाधारण को मात्र 20 रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। अत: सभी पाठकों, आर्यजनों, दानी महानुभावों, आर्यसमाजों/सभाओं एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि सत्यार्थ प्रकाश की अधिकाधिक प्रतियां 20/- में उपलब्ध कराने हेत 30/- रुपये प्रति की दर से सब्सिडी (छूट) सहयोग प्रदान करें। आप अपना सहयोग 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा भेजकर अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा करके अथवा दिया गया क्यू.आर. कोड स्कैन करके भी दे सकते हैं –

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 1098101000777 केनरा बैंक, IFSC - CNRB0001098 MICR - 110015025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388 को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद प्राप्त कर लेवें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

चलो मुम्बई! चलो मुम्बई!! चलो मुम्बई!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा

आर्यसमाज का 150वाँ स्थापना दिवस समारोह

29-30 मार्च, 2025 : सिडको कन्वैंशन सैन्टर, वाशी, नई मुम्बई

समारोह एवं यात्रा कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी पृष्ठ 7-8 पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

03 फरवरी, 2025
से
09 फरवरी, 2025

देववाणी-संस्कृत

हे वरुण! हमें आत्म -साम्राज्य प्रदान करो

वेद-स्वाध्याय

शब्दार्थ-वरुणः = वरुण **धृतव्रतः** = अटल व्रतों के धारणकर्त्ता और **सुक्रतुः** = सदा सोभन कर्म ही करने वाले होकर **साम्राज्याय** = साम्राज्य के लिए **पस्त्यासु आ** = प्रजाओं के अन्दर आकर **निषाद** = बैठा हुआ है।

विनयः- वरुण सम्राट हम प्रजाओं के अन्दर आकर बैठा हुआ है। यह कितनी विचित्र बात लगती है! परन्तु यह उतनी ही सच्ची है। वास्तविक साम्राज्य अन्दर ही है। बाहर भी सच्चा सम्राट वही हो सकता है जिसने पहले अपनी प्रजाओं के हृदयों में सिंहासन प्राप्त कर लिया है। प्रजाओं के हृदयों में घुसे बिना कोई सच्चा सम्राट् नहीं बन सकता। ठीक-ठीक सच्चा शासन अन्दर घुसकर ही किया जा सकता है। इसलिए सब ब्रह्माण्ड के एकमात्र अखण्ड

नि षसाद धृतव्रतो वरूणः पस्त्याऽस्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः।।
-ऋ० 1।25।10
ऋषिः- अजीगर्तिः शुनः शेपः।। देवता-वरूणः।। छन्दः- गायत्री।।

सम्राट जो वरुण देव हैं, वे हम प्रजाओं के अन्दर आकर बैठे हुए हैं। उस वास्तविक सम्राट के दर्शन के लिए यदि हम निकलें तो हमें बाहरी सम्राटों के पास पहुँचने के समान, उसके पास पहुँचने के लिए कहीं बाहर नहीं फिरना होगा। वे तो स्वयं हमारे अन्दर आकर बैठे हुए हैं और इसलिए आकर बैठे हैं कि हमें साम्राज्य दे दें- 'साम्राज्याय'। परन्तु हम ऐसे मूर्ख हैं कि हमें कुछ खबर ही नहीं है! हम छोटी-छोटी बातों पर हुकूमत पाने के लिए-राज्य पाने के लिए बाहर घूमते-फिरते हैं, लड़ते- झगतड़ते, सत्यादि नियमों को भङ्ग करते, मार-काट करते फिरते हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि सर्वश्रेष्ठ (वरुण) राजा तो स्वयं हमें सारे संसार का सम्राट् बनाने के लिए, विश्व का साम्राज्य देने के लिए अन्दर आकर बैठा हुआ है और प्रतीक्षा कर रहा है, किन्तु हम उधर देखते ही नहीं।

जो उधर देखते हैं वे देखते हैं कि वे वरुण प्रभु ''धृतव्रत'' हैं-वे व्रतों को धारे हुए हैं, उनके व्रत अटल हैं, उनके नियम कभी टूट नहीं सते; और वे ''सुक्रतु'' हैं-शोभन कर्म ही करनेवाले हैं, उनसे कभी बुरा कर्म हो ही नहीं सकता। हम भी यदि सत्य नियमों का कभी भङ्ग न करनेवाले और सदा शोभन कर्म करनेवाले हो जाएँगे तो उसी क्षण हमें वह सच्चा साम्राज्य मिल जाएगा। वे महात्मा उस साम्राज्य को भोग रहे हैं जिनके लिए सत्य व्रतों का उल्लंघन और बुरा काम होना असम्भव हो गया है। यह वह साम्राज्य है जिसके प्रथम दर्शन होने पर सब कालों और सब देशों के इस महापद को प्राप्त महापुरुष चिल्ला उठते हैं- ''मुझे जो पाना था वह वह पा लिया, 1 मैं सम्राट् हो गया'', ''मैं तो अमृत हूँ।''[2]

-ःसाभारः- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मुफ्तवाद, शराब और पैसा क्या लोकतंत्र की तस्वीर बदल रही है?

एक के साथ एक फ्री या दो के साथ एक फ्री ऐसी स्कीम कंपनियां दिया करती थीं ताकि वे ग्राहक को लुभा सकें। किन्तु अब यह फार्मूला लोकतंत्र में भी आजमाया जा रहा है। चुनाव किसी भी राज्य में हों, राजनीतिक दल फ्री-फ्री योजना की घोषणा करते दिख जाते हैं। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सभी ने फ्री स्कीम का पिटारा खोल दिया है। बस वोट चाहिए, सरकार बननी चाहिए, उसके लिए कुछ भी फ्री देने के लिए तैयार हैं। भारत में फ्री सुविधाओं की कई स्कीमों की वैल्यू सरकार के कई विभागों के सालाना बजट से भी ज्यादा है। फ्री सुविधाओं का ऐलान मतलब पार्टी के लिए जीत की गारंटी।

आजकल चुनावों में यह एक तरह से कल्चर बनता जा रहा है कि जो पार्टी जितनी मुफ्त सुविधाएं देंगी, उस पार्टी का चुनाव जीतने का चांस उतना बढ़ जाएगा। इसके चलते सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सबने फ्री सुविधाओं की झड़ी सी लगा दी है क्योंकि आखिर चुनाव सभी को जीतना है। सरकार सबको बनानी है। पहले फ्री की सुविधाओं का ऐलान कुछ चीजों के लिए होता था, लेकिन आज बस कुछ चीजें ही बची हैं, जिनको फ्री किया जाना बाकी रह गया है।

फ्री के बाद शराब बांटा जाना भी लोकतंत्र की गरिमा को चोट पहुंचा रहा है। चुनाव आयोग के अनुसार दिल्ली विधानसभा चुनाव में अब तक 38 करोड़ 64 लाख रुपये से ज्यादा कैश बरामद हुआ है। जबकि 2020 के विधानसभा चुनाव में 12 करोड़ 81 लाख रुपये जब्त किए गए थे। आंकड़ों के हिसाब से देखें तो पिछले विधानसभा चुनाव की तुलना में इस बार 202 फीसदी ज्यादा कैश पकड़ा गया है।

दिल्ली चुनाव में अब तक 88 करोड़ रुपये से ज्यादा का नारकोटिक्स सीज किया गया है। यह पिछले विधानसभा चुनाव के मुकाबले 1000 फीसदी से भी ज्यादा है। इस चुनाव में सोना-चांदी के आइटम भी भरपूर मात्रा में पकड़े गए हैं। अब तक आयोग ने 81 करोड़ रुपये का बुलियन (सोने-चांदी का प्योरस्ट फार्म) जब्त किया है, जो कि पिछले चुनावों की तुलना में 140 फीसदी ज्यादा है। पिछले चुनाव में लगभग 33 करोड़ का सोना-चांदी जब्त हुआ था।

दिल्ली चुनाव में शराब घोटाले को विपक्षी पार्टियां मुद्दा बना रही हैं। वहीं सारी पार्टियां चुनाव के दौरान एक-दूसरे पर शराब बांटने का आरोप भी लगा रही हैं। इन सबके बीच इस चुनाव में अब तक 4 करोड़ 94 लाख रुपये की शराब पकड़ी गई है। जबकि पिछले चुनाव (2020) में 2 करोड़ 91 लाख रुपये की शराब जब्त हुई थी। यानी शराब की मात्रा भी 70 फीसदी से ज्यादा बढ़ गई है।

चुनाव के दौरान पैसे, शराब और ड्रग्स का खेल रोकना चुनाव आयोग के लिए बड़ी चुनौती साबित हो रहा है। लगभग 2700 क्रिमिनल केस भी दर्ज किए गए हैं। ये संख्या भी पिछले चुनाव के मुकाबले 650 अधिक है।

यानि अब आगे बनने वाली सरकारें चुनी हुई सरकारें न रहकर मतदाता को खरीदने वाली सरकारें रह जाएंगी। जबकि आम मतदाता इस बात को नहीं समझ पा रहा है कि फ्री की सुविधा वोटरों को लुभाने के लिए एक शॉर्ट टर्म स्कीम होती है। जब तक उस पार्टी की सरकार है, स्कीम जिंदा है और चल रही है। सरकार गई , स्कीम गई। कई बार इन फ्री की सुविधाओं की खामियाजा बाकी लोगों को भी भुगतना पड़ता है। फ्री सुविधाओं को हम पूरी तरह वेलफेयर स्कीम में नहीं रख सकते, क्योंकि यह शॉर्ट टर्म रिलीफ के तौर पर काम करती है। सबसे पहले तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के कामराज ने मिड डे मील योजना की घोषणा की थी। इस

दिल्ली चुनाव में अब तक 88 करोड़ रुपये से ज्यादा का नारकोटिक्स सीज किया गया है। यह पिछले विधानसभा चुनाव के मुकाबले 1000 फीसदी से भी ज्यादा है। इस चुनाव में सोना-चांदी के आइटम भी भरपूर मात्रा में पकड़े गए हैं। अब तक आयोग ने 81 करोड़ रुपये का बुलियन (सोने-चांदी का प्योरस्ट फार्म) जब्त किया है, जो कि पिछले चुनावों की तुलना में 140 फीसदी ज्यादा है। पिछले चुनाव में लगभग 33 करोड़ का सोना-चांदी जब्त हुआ था।

दिल्ली चुनाव में शराब घोटाले को विपक्षी पार्टियां मुद्दा बना रही हैं। वहीं सारी पार्टियां चुनाव के दौरान एक-दूसरे पर शराब बांटने का आरोप भी लगा रही हैं। इन सबके बीच इस चुनाव में अब तक 4 करोड़ 94 लाख रुपये की शराब पकड़ी गई है। जबकि पिछले चुनाव (2020) में 2 करोड़ 91 लाख रुपये की शराब जब्त हुई थी। यानी शराब की मात्रा भी 70 फीसदी से ज्यादा बढ़ गई है।

स्कीम को 1956 में शुरू किया गया था। बाद में इसको केंद्र की सरकार ने पूरे देश में लागू किया। एन टी रामाराव ने सबसे पहले दो किलो फ्री राशन देने की घोषणा की थी। आंध्र प्रदेश की यह स्कीम आज नेशनल फूड सिक्योरिटी प्रोग्राम का हिस्सा है।

1967 में डीएमके के फाउंडर सीएन अन्नादुरई ने चुनाव जीतने के लिए एक वादा किया था। उन्होंने कहा था कि अगर वे सरकार में आते हैं तो 4.5 किलो चावल एक रुपये में देंगे। साल 2006 में डीएमके पार्टी की तरफ से वादा किया गया था कि अगर वे सरकार में आते हैं, तो लोगों को फ्री कलर टीवी दिया जाएगा। बाद में इस तरह के वादे जमीन देने, लैपटॉप देने, साइकिल देने तक पहुंचे।

कोरोना से अब तक केंद्र सरकार का फ्री राशन हो, किसानों के लिए लोन माफी हो, फ्री बिजली, फ्री पानी, फ्री बस की सवारी, फ्री पढ़ाई या फ्री तीर्थयात्रा की सवारी हो। ये सब के सब अभी तक असरदार और कारगर साबित हुए हैं, किसी भी पार्टी को चुनाव जीताने में। अगर हम पिछले 8 विधानसभा चुनावों को देखें तो यह निकलकर सामने आता है कि मुफ्त रेवड़ियों ने राज्य के चुनावों पर अपना गहरा असर डाला है। अगर हम सिर्फ पांच योजनाओं को देखें तो इनमें-महिलाओं के मासिक भत्ते ने महाराष्ट्र, पंजाब, मध्य प्रदेश में सरकार बनाने में अपना अहम रोल प्ले किया है। अगर सरल शब्दों में कहें तो यह गेमचेंजर साबित हुआ है। मुफ्त बस यात्रा ने दिल्ली में आम आदमी की पार्टी को सरकार बनाने में अहम रोल प्ले किया है। फ्री बस सुविधा ने युवाओं और महिलाओं के वोटों को अपनी तरफ खीचा है।

यही हाल फ्री बिजली स्कीम्स का है। दिल्ली के आसपास जिलों में जो लोग काम करने आते हैं, वे वहां रहने के बजाय दिल्ली में रहना ज्यादा पसंद कर रहे हैं क्योंकि वहां फ्री बिजली और पानी की सुविधा मिल जाती है। किसान सम्मान निधि और मुफ्त एलपीजी गैस सिलेंडर ने उत्तर प्रदेश जैसे बड़े प्रदेश को सीधा टारगेट किया है और यहां सरकार बनाने में अहम रोल निभाया है। इन स्कीम का परिणाम अगर हार-जीत से अलग हटकर सोचें तो क्या हमें फ्री-फ्री की बाढ़ में काबिल राजनेता मिल पाता है? असल में फ्री कल्चर और मुफ्तवाद की इस राजनीति में एक वर्ग तैयार हो चुका है जो यह कहता है कि मुझे कौन जीता, इससे क्या मतलब? मुझे वोट देना था, मैंने दे दिया। चाहें बाहुबली जीते या अपराधी? ऐसी ही लाचारी का नतीजा है कि आज ऐसे बाहुबली, भ्रष्ट, बेईमान, अपराधी लोग संसद में या विधानसभाओं

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य चर्चा — उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है- नियमित दिनचर्या और शुद्ध आहार

प्रकृति के नियमों का पालन करना ही स्वस्थ रहने का आधार स्तम्भ हैं।

- सुबह सूर्य उदय से कम से कम 1/2 घंटो पहले बिस्तर त्याग देवें। अन्यथा सूर्य की प्रखर किरणें वास्तविक तेज व शक्ति को कमजोर करती हैं।
- सुबह उठते ही (उषा पान) दो-तीन गिलास रात्रि में घड़े या तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीवें। पानी क्रमशः बढ़ाएं।
- पानी-पीने के तुरन्त बाद अफारा या गैस हो तो तुरन्त थोड़ा गर्म पानी पीवें। अलार्म की तरह शौच जाने की नियमित आदत डालें।
- शौचादि से निवृत्त होकर खुली-ताजी हवा में बिना बातचीत के शरीर के अंग-अंग को हिलाते हुए 1-2-3 किलोमीटर यथा शक्ति घूमें। लौटने पर हल्का-सा विश्राम करके योगासन, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान, ईश जाप स्मरण जरूर करें।
- स्वच्छता एवं ताजगी के लिए प्रतिदिन बदन रगड़-रगड़ कर स्नान करें। साबुन का प्रयोग कम करें। शुद्धता के लिए मुल्तानी मिट्टी, बेसन, उबटन इत्यादि का प्रयोग करें।
- स्नान करते समय या सुबह उठने के पश्चात स्वच्छ एवं ताजा पानी मुंह में भरकर आंखों में 8-10 बार छींटें मारें। श्वास फूलने पर मुंह का पानी निकाल दें। कम से कम यह क्रिया तीन बार करें। आंखों की रोशनी में चमत्कार होगा। त्रिफला को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर, निथारकर, इस पानी से भी आंखें धो सकते हैं। किसी भी किस्म की आंखों की तकलीफ हो तो प्राकृतिक चिकित्सक की सलाह अवश्य लेवें।
- स्कूटर इत्यादि चलाते समय आंखों को धूल-धक्कड़ से बचाने के लिए अच्छा चश्मा अवश्य पहनें।
- दिन में 4-5 बार ठंडे सादे पानी से आंखों में छींटें देवें।
- विश्राम करने के लिए हल्के किस्म का बिस्तर या रूई का गद्दा प्रयोग करें।
- बाजू का तकिया बनावें या पतला तकिया प्रयोग करें।
- टी.वी. दूर से देखें एवम् उपयोगी दृश्य ही देखें।
- रात को अधिक देर न जागें।
- दवाई आकस्मिक स्थिति में ही सेवन करें। अधिक दवाइयां फायदा कम नुकसान ज्यादा देती हैं।
- हमेशा सीधे पॉसर में बैठें या खड़े होवें। कमर सीधी रखें।
- गहरे श्वास-प्रश्वास लेवें।
- भोजन के तुरन्त बाद लघुशंका करने की आदत डालें।
  भोजन के बाद 5-15 मिनट वज्रासन में बैठें।
- दिन में कम से कम 8-10 गिलास (तीन लीटर) पानी पीवें।
- अधिक फुजले वाला आहार लेवें।
- दिन में मुख्य भोजन दो बार ही करें। सुबह अल्पाहार जैसे जूस, अंकुरित अनाज या छाछ इत्यादि ले सकते हैं।
- शाम के भोजन के पश्चात् एक-दो किलोमीटर की सैर करें।
- भोजन सोने के बीच कम से कम दो-तीन घंटे का अन्तर रखें।
- भोजन सात्विक, रुचिकर, खूब चबा-चबा कर एवं थोड़ी गुंजाईश रखकर खावें।
- कच्चे आहार जैसे अंकुरित अन्न, सलाद, मौसम के अनुसार फल, प्राकृतिक पेय एवम प्राकृतिक व्यंजन ज्यादा सेवन करें।
- भोजन के 1/2 घंटा पहले एवम एक घंटा बाद पानी पीवें।
- परिष्कृत एवम् गरिष्ठ भोजन से परहेज रखें।
- धूम्रपान, चाय, काफी, शराब, सॉफ्ट ड्रिंक्स तथा अन्य नशीले और मादक पदार्थ न लेवें।
- मांसाहार भोजन न लेवें।
- एकदम गरमागरम एवम ठन्डे पेय एवं भोजन न लेवें।
- शरीर के तापमान पर ही भोजन करें। स्वस्थ रहने के लिए पानी उपचार एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन औषधिक के समान हैं।
- स्वस्थ होने पर सप्ताह में एक दिन रसाहार या फलाहार पर उपवास करें।
- कब्ज होने पर सादे पानी का एनिमा व्यवहार में लावें।
- जो लोग खाना आधा, पानी दो गुना, व्यायाम तीन गुना, हंसना चार गुना, ध्यान पांच गुना करते हैं वे बीमार न के बराबर होते हैं।
- सप्ताह के अवकाश में शरीर शोधन करें। शरीर की मालिश लेकर धूप स्नान का आनन्द उठावें।
- किसी भी किस्म का कष्ट हो तो प्राकृतिक उपचार ही लेवें।

जीवन के आधारभूत तत्वों में भोजन का स्थानः-

- स्वस्थ एवं साफ-सुथरा स्थान
- शुद्ध वायु
- शुद्ध जल
- पर्याप्त धूप
- खुला आकाश
- शारीरिक श्रम और कम भोजन
- अधिक काम-क्रोध, लोभ-मोह, मानसिक चिन्ता यह रोग को जन्म देते हैं।

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे -

हमारे यहां अत्याधिक उन्नत वैद्यशालाएं (एस्ट्रोलाजिकल सेण्टर) थीं, कालगणना करने के वैज्ञानिक तन्त्र थे, समय को विभाजित करने का वैज्ञानिक तौर-तरीका था। समय को दिन-घंटे-मिनट और सैकेण्ड में विभाजन हमारे ही वैज्ञानिक ऋषियों की तो देन थी।

आयुर्वेद (मैडिकल साइंस) का ज्ञान तो इतना विस्तृत था कि सामान्य आयु 200 से 300 वर्ष की होती थी। इसका उदाहरण तो इस वैभवशाली काल की समाप्ति के दौर के महाभारत के युद्ध में भी देखा सकता है। महाबली भीष्म जब युद्ध कर रहे थे तो उनकी आयु लगभग 175 वर्ष की थी और वो युवावस्था थी, बेहतरीन आयुर्वेद के जाने बिना ऐसा होना क्या सम्भव है?

उसके कुछ समय पूर्व रामायण काल में महावीर हनुमान ताजी बूटी लेने हिमालय पर जाते हैं और तुरन्त लौटकर वापस आते हैं तो क्या ये बेहतरीन और उन्नत विमानों के बिना सम्भव था? 50 किलोमीटर के समुद्र पर बहुत कम समय में सेतु (पुल) बना देना क्या बेहतर इंजिनियरिंग के ज्ञान के बिना सम्भव है?

महाभारत के युद्ध के समय जब संजय, धृतराष्ट्र को युद्ध का आंखों देखा हाल बता रहे थे तो ये आधुनिक दूरदर्शन और आकाशवाणी जैसे ज्ञान बिना कैसे सम्भव है? महाभारत में वर्णित 'लाक्षागृह' क्या कोई छोटी वैज्ञानिक संरचना है। रामायणकाल और महाभारतकाल में प्रयुक्त आग्नेयास्त्र, जलास्त्र आदि का उपयोग आज के आधुनिक मिसाइल विद्या ही तो थी।

पदार्थ विद्या (मैटेरियल साइंस), पंचतत्व (5 Basic Element) सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारत वर्ष का वैभव काल अग्नि (Fire) की मूल विद्या का भारत में व्यापक उपयोग था। माता सीता की रक्षा के लिए खींची गई लक्ष्मण रेखा के विज्ञान तक हम आज भी नहीं पहुंच सके।

गणित की सभी शाखाओं- अंक गणित (अर्थमैटिक), त्रिकोणमिति (ट्रीगोनोमैट्री), ज्यामिति (ज्योमैट्री), एलजेब्रा, पाइथागोरस (बोधायन सूत्र), शून्य का ज्ञान (Velue of Zero), पाई (पाई =22/7), दशमलव (डेसिमल (.)) आदि की थ्योरी पर बेहतरीन से बेहतरीन व्याख्याएं हमारे ऋषियों द्वारा लिखी जा चुकी थी और इन सबका उपयोग अन्तरिक्ष विद्या, ग्रहों की दूरियों को मापने तथा अन्य कार्यों के लिए भी होता था। सात ग्रहों के आधार पर सप्ताह की कल्पना आपके ही ऋषियों की देन थी। काल गणना इतनी स्पष्ट थी कि हमारे वैज्ञानिक (ऋषि) आने वाले हजारों वर्षों के सूर्य ग्रहण-चन्द्र ग्रहण का समय, तिथि निश्चित बता पाने में सक्षम थे।

भारत के उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मन्दिर वास्तव में अत्यधिक विशाल वेधशाला थी जो काल गणना के प्राचीनतम केन्द्रों में से एक था और इन्हीं केन्द्रों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पंचांग का निर्माण होता था। जो पंचांग (पांच अंग) यानि पांच परिवर्तनशील तत्व (नक्षत्र, तिथि, योग, करण और वार) की गणना और निष्कर्ष का विज्ञान है।

इसी चर्चा में आइए एक विशेष घटनाक्रम का ध्यान करें-आधुनिकतम कहे जाने वाले यूरोप में एक बहुत छोटी-सी विज्ञान की बात कहने पर, न जाने कितने योग्य वैज्ञानिकों को अपमानित होना पड़ा, फांसी पर चढ़ना पड़ा, मृत्यु के मुख में समाना पड़ा, किताबें जलाई गईं निकोलस, ब्रूनो, गैलिलियो आदि। उन्होंने यही तो कहा था कि पृथ्वी 'चपटी' नहीं 'गोल' है और सूरज इसके चारों ओर चक्कर नहीं लगाता बल्कि यह सूरज के चारों ओर चक्कर लगाती है- किन्तु उनके धर्मग्रन्थों में इसके विपरीत लिखा था और केवल इसीलिए उपरोक्त वैज्ञानिकों ने अनेक जिल्लतें सही। आप एक क्षण रुककर कल्पना करें, ये लगभग 500 वर्ष पूर्व की ही तो बातें हैं। पर, पाठक आश्चर्य करेंगे कि हमारे आर्यवर्त (भारत) में तो इस बात को लेकर कभी प्रश्न ही खड़ा नहीं हुआ कि पृथ्वी 'चपटी' है या 'गोल'। क्योंकि हमारा ज्ञान-विज्ञान तो इतना उन्नत था कि पृथ्वी के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द में ही इसका पूर्ण अर्थ छिपा है' भूगोल' आप विचार करें कि कितने परिश्रम से ये सब ज्ञान संजोया गया होगा कि शब्द ही अपने आप बता रहा-पृथ्वी 'गोल' है। सूर्य की उत्तरायण गति, दक्षिणायण गति की जानकारी और उपयोग तो हमारे भारत में लाखों वर्ष पूर्व से होता आया है।

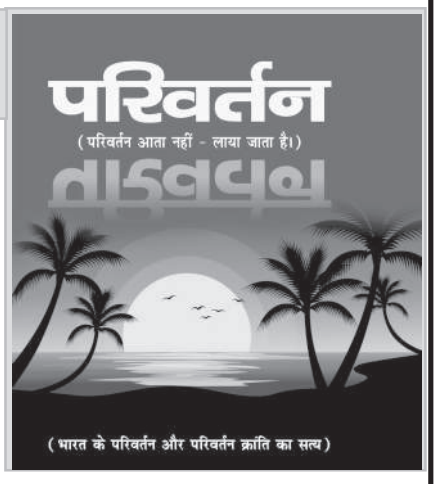

- क्रमशः

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

प्रथम पृष्ठ का शेष

9 फरवरी को रात्रि 8 बजे होगा समापन : प्रतिदिन हॉल नं. 2-3 में स्टाल नं. N 05 पर अवश्य पहुंचें आर्यजन

प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं राष्ट्र निर्माण पार्टी के संरक्षक ठाकुर विक्रम सिंह जी ने फीता काटकर किया, जिसमें आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री, श्री सतीश चड्ढा जी, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, मंत्री श्री सुखवीर सिंह आर्य जी, डॉ. मुकेश आर्य जी एवं अन्य अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। आर्य समाज के इस वृहद स्टाल की साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षण से भरपूर दिखी, ओम् के झंडे और बैनर तथा पुस्तकों का रख रखाव और पूरी व्यवस्था अत्यंत ही मनोहरी है, सभी अधिकारियों ने और कार्यकर्ताओं ने पीत वस्त्र गले में डाले हुए थे, महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की जय-जयकार करते हुए, इस पुस्तक मेले का भव्य उद्घाटन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

मेले में महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा रचित अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पर विशेष छूट प्रदान की गई है और एक तरह से उसको विश्व स्तर तक पहुंचाने का यह एक बड़ा अभियान और तेज किया गया है, महर्षि की 200वीं जयंती पर प्रकाशित अनेक पुस्तकों को स्टॉल पर प्राथमिकता दी गई है, वेदों पर आधारित आर्य समाज के महापुरुषों, सन्यासियों, विद्वानों का साहित्य हर आयु वर्ग के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है, जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर आधारित 10 लाख के इनामी प्रतियोगिता वाला कॉमिक भी उपलब्ध है, महर्षि की जीवनी और समाज को मार्गदर्शन देने वाली पुस्तक परिवर्तन, महर्षि के अमर वाक्य, गले लगाइए, देश बचाइए, अंधविश्वास निवारण, प्राकृतिक खेती अपनाएं देश बचाएं, नशा हटाइए, यौवन बचाइए, रिश्ते बचाइए, देश बचाइए इत्यादि पुस्तकों के अनेक सेट विशेष रूप में उपलब्ध है, जिन्हें आप एक दूसरे को गिफ्ट भी दे सकते हैं।

दिल्ली के समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, कार्यकर्ता और समस्त आर्य संगठनों के, आर्य शिक्षण संस्थानों के और आर्य परिवारों के स्त्री पुरुष और बच्चे सभी पुस्तक मेले में आर्य समाज के स्टॉल पर अवश्य आएं और वैदिक साहित्य खरीदें और प्रचार-प्रसार में सेवा सहयोग करें। यह मेला लगातार 9 दिन तक चलेगा, इसमें एक बार तो सभी को अवश्य जाना चाहिए और आर्य समाज के वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के अभियान को तेज करना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा प्रकाशित दो बहनों की बातें अंग्रेजी पुस्तक का विमोचन 3 फरवरी 2025 को किया गया, यह पुस्तक अपने आप में अत्यंत प्रेरक और सारगर्भित है, इसको भी आप अवश्य प्राप्त करें।

पुस्तक मेले के उपरान्त वैदिक साहित्य प्राप्त करने के लिए 9540040339 पर सम्पर्क करें। - ***संयोजक***

आर्य प्रकाशन भी कर रहा है विश्व पुस्तक मेले में साहित्य प्रचार

विश्व पुस्तक मेले में आर्य प्रकाशन के स्टाल का उद्घाटन राष्ट्र निर्माण पार्टी के संरक्षक ठाकुर विक्रम सिंह जी किया। सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने स्वयं स्टाल पर जाकर संजीव कोहली जी को इसके लिए बधाई देकर उनका उत्साह वर्धन किया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार को अधिकाधिक करने की बात कही।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर जारी स्मृति डाक टिकट

आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग

भारतीय डाक India Post

विशेष अनुरोध - सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अत: समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे।

आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA

A/c No. : 2009257009039 IFSC :CNRB0002009 Canara Bank New Delhi

नोट – यह डाक टिकट ऑनलाइन भी प्राप्त की जा सकती है। सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी सुविधा के लिए कोड स्कैन करें लॉग-इन करें अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें

vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

सहयोग : आर्यसमाज का कल्याणकारी प्रकल्प

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा सभा के सहयोग प्रकल्प को अत्यन्त सराहनीय योगदान

अहाना एनजीओ ने अमेरिका से तीसरी बार भेजी वस्त्रों की बड़ी खेप

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की सेवा इकाई सहयोग पूरे भारत में गतिशील है। भारत की राजधानी दिल्ली एनसीआर में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस योजना द्वारा अभावग्रस्त सेवा बस्तियों में जो लोग, वस्त्र, जूते, चप्पल, बच्चों के पढ़ने लिखने के लिए स्टेशनरी के सामान, खेलने के लिए खिलौने आदि मूलभूत जरूरतों के लिए परेशान हैं, उन्हें सामर्थ्यवान लोगों के पुराने लेकिन पहनने लायक कपड़े, जूते, चप्पल, स्टेशनरी, खिलौने आदि सामान, जिनका वे उपयोग नहीं करते उसे इकट्ठा करके, साफ, स्वच्छ करके, प्रेस करके, पैक

करके गरीब निर्धन लोगों में वितरित करने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। यह सेवा अपने आप में बहुत सफल हो रही है, गरीब सेवा बस्तियों के लोग आर्य समाज से जुड़ रहे है, दुर्गुणों से बच रहे हैं।

इस मानव कल्याण की सेवा योजना में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा अहाना एन.जी.ओ. के माध्यम से प्राप्त वस्त्रों का वितरण धनश्री और बोकाजन, असम, दीमापुर, नागालैंड, भामल, मध्य प्रदेश में गरीब लोगों तथा दिल्ली एन सी आर की जय-जय कालोनियों करते आए हैं। अभी पिछले दिनों लगातार तीसरे वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका (USA) के निर्देशन में "AHAANA" NGO के सौजन्य से अमेरिका (AMERICA) से अच्छी मात्रा में वस्त्रादि ज़रूरतमंदो के लिए दिल्ली पहुँचाए गए हैं। इसके लिए सहयोग की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका एवं "AHAANA" NGO का हार्दिक आभार।

यदि आप भी अपने घर, परिवार, सोसायटी से वस्त्रादि एकत्रीकरण करने अथवा अपने क्षेत्र के जरुरतमंद परिवारों बंटवाना चाहते हैं तो 9540050322 से सम्पर्क करें।

– ***सन्नी भारद्वाज, संयोजक***

दिल्ली सभा का प्रकल्प : घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ

योजना का हो रहा है दिल्ली में बड़ा विस्तार : यज्ञ प्रशिक्षित महिलाओं ने दक्षिण दिल्ली क्षेत्र की जय-जय कालोनियों में किया हवन प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिधि सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ के कल्याणकारी योजना के अन्तर्गत जय-जय कालोनियों की महिलाओं को विधिवत यज्ञ का प्रिक्षण प्रदान किया गया। परिणाम स्वरूप अब ये याज्ञिक महिलाएं घर-घर जाकर यज्ञ की ज्योति को प्रज्वलित कर रही हैं, वेद मंत्रों का उच्चारण कर रही हैं, स्वाहा-स्वाहा की ध्वनि गंजायमान हो रही है, यज्ञ प्रार्थना और भजनों के सामूहिक मधुर गायन से मानव निर्माण के कार्य को गति मिल रही है, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य समाज का संकल्प घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ का सपना साकार हो रहा है।

अभी पिछले दिनों जनवरी मास में दक्षिणी दिल्ली की जय-जय कालोनियों में 16 जनवरी से लेकर 31 जनवरी तक दर्जनों घरों में प्रशिक्षित महिलाओं ने यज्ञ करने का कीर्तिमान स्थापित किया जो कि लगातार गतिशील है और आने वाले टाइम में हजारों घरों में यज्ञ की ज्योति प्रज्वलित की जायेगी।

आइए, सभा की इस कल्याणकारी योजना में सहभागी बनें, इन जय-जय कालोनियों में यज्ञ करना कराना पूरी तरह से परोपकार ही परोपकार है। इसमें घी, सामग्री, समिधा, यज्ञपात्र, दरी, माइक और यज्ञ के ब्रह्मा आदि विद्वान, भजनोपदेशक आदि की व्यवस्था में सहयोग अथवा यज्ञ के आयोजन हेतु सम्पर्क करें।

– ***बृहस्पति आर्य, संयोजक 9650183335***

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु
8750-200-300
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें
आर्य समाज ARYA SAMAJ ESTD. 1875

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ☆ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ☆

समान गोत्र में विवाह करना उचित नहीं ?

महर्षि दयानन्द आयुर्वेद (चिकित्सा विज्ञान) के आधार पर कहते हैं कि एक ही गोत्र में विवाह नहीं होना चाहिए, उनके शब्दों में देखें –

"अपने सगोत्र में विवाह करने से दोष क्यों है कि इससे शरीर, आत्मा, प्रेम, बल आदि की उन्नति यथावत् नहीं होती, इसीलिए भिन्न-भिन्न गोत्रों में ही विवाह-सम्बन्ध करना उचित है।"

–महर्षि दयानन्द के पत्र व्यवहार

– आज का आधुनिक विज्ञान भी इस तथ्य को ज्यों का त्यों स्वीकार करता है।

17

स्त्री-पुरुष विवाह किससे और कैसे करें?

"विवाह स्त्री तथा पुरुष को अपनी रुचि के अनुसार करना चाहिए क्योंकि पुरुष को स्त्री से और स्त्री को पुरुष से सारे जीवन भर निभाव करना पड़ता है। जब वे अपनी रुचि के अनुसार एक दूसरे के रूप, आकार, प्रकार और चाल-चलन तथा अन्य विषयों को देख लेंगे तो फिर सम्भव नहीं कि स्त्री और पुरुष में परस्पर झगड़े की को ई अवस्था उत्पन्न हो। नहीं तो (केवल) माता और पिता का पसन्द किया हुआ सम्बन्ध स्त्री तथा पुरुष को कब पसन्द हो सकता है?"

–महर्षि दयानन्द के पत्र व्यवहार 18

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे–

ऐसी घटनाओं को सुनकर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि कैसे चुप रह सकते थे! वह दम्भ और धोखे के शत्रु थे। वह धर्म में सुलहनामा करने पर विश्वास नहीं रखते थे। फलस्वरूप महर्षि जी को थियोसॉफी के संस्थापकों के असत्य व्यवहार पर घृणा होने लगी।

उधर मूर्ख जनता को जाल में फंसाने का खुला अवसर देखकर वह युगल भी महर्षि जी की शिष्यता से इन्कार करने का उपाय सोचने लगे। कुछ दिनों तक पत्र-व्यवहार जारी रहा। मैडम ब्लैवेट्स्की और कर्नल अल्कॉट का यत्न यह रहा कि किसी प्रकार आर्यसमाज के सभासदों को थियोसॉफी के चंगुल में फंसाया जाए। एक ओर थियोसॉफी की ओर से सृष्टिकर्त्ता ईश्वर से इन्कार, दूसरी ओर चमत्कारों का दम्भ! महर्षि ने आवश्यक समझा कि आर्यपुरुषों को सचेत कर दिया जाय। कुछ दिनों तक पत्र-व्यवहार जारी रहा। मैडम ब्लैवेट्स्की और कर्नल अल्कॉट का यत्न यह रहा कि किसी प्रकार आर्यसमाज के सभासदों को थियोसॉफी के चंगुल में फंसाया जाए। एक ओर थियोसॉफी की ओर से सृष्टिकर्त्ता ईश्वर से इन्कार, दूसरी ओर चमत्कारों का दम्भ! महर्षि ने आवश्यक समझा कि आर्यपुरुषों को सचेत कर दिया जाय।

असौज बदी चतुर्दशी संवत् 1937 को मेरठ के आर्यसमाज का दूसरा वार्षिकोत्सव था। इस उत्सव के अवसर पर महर्षि जी के दो व्याख्यान हुए। इन व्याख्यानों में आपने उन कारणों पर प्रकाश डाला, जिनसे आर्यसमाज थियोसॉफी से अलग होने पर बाधित हुआ और यह भी घोषणा की। कि किसी आर्यसमाजी को थियोसॉफी का सभ्य न बनना चाहिए। दोनों में कई मौलिक भेद उत्पन्न हो गए थे– (1) थियोसॉफिस्ट सृष्टिकर्त्ता ईश्वर को नहीं मानते थे। (2) वे अपने को बौद्ध कहते थे। (3) वे हिमालयवर्ती किन्हीं कल्पित महात्माओं के होने, और उनके गुप्त सन्देशों पर विश्वास रखते थे। (4) वे सिद्धियों के नाम पर चमत्कारों को मानते और उनका दावा भी करते थे। (5) थियोसॉफी में ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, हिन्दू, सब एक-दूसरे के विरुद्ध सिद्धान्तों को मानते हुए प्रविष्ट हो सकते थे। इस प्रकार थियोसॉफी आर्यसमाज से कोसों दूर चली गई थी। महर्षि दयानन्द की ओर से यह घोषणा आवश्यक हो गई थी, अन्यथा आर्यसमाज के नाश का भारी भय था। थियोसॉफी में कई ईसाई भी शामिल हो गए थे। उनमें से अनेक राजकर्मचारी भी थे। थियोसॉफी के संचालक चाहते थे कि राज्य के कर्मचारियों की सहानुभूति का प्रलोभन देकर ही आर्यसमाज को फुसलाया जाय, परन्तु वह हथियार भी निकम्मा साबित हुआ।

मेरठ में महर्षि दयानन्द द्वारा हुई घोषणा से कर्नल अल्कॉट और मैडम ब्लैवेट्स्की के कल्पित कार्यक्रम को भारी धक्का पहुंचा। वे दिल में सोचे बैठे थे कि अब शीघ्र ही सारे आर्यसमाज हमारे काबू में आ जाएंगे और थियोसॉफी, जो प्रारम्भ में आर्यसमाज की शाखा बनी थी, उसे खा जाएगी। महर्षि के व्याख्यान ने इस मीठे मन्सूबे को तोड़ दिया। उस समय मैडम ब्लैवेट्स्की शिमला में थीं। वहां उन्हें महर्षि जी की घोषणा का समाचार मिला। वह बहुत छटपटाई और मेरठ के बाबू छेदीलाल जी के नाम उन्होंने एक चिट्ठी भेजी। चिट्ठी बहुत लम्बी है, इस कारण उसके कुछ आवश्यक उद्धरण ही यहां दिये जाते हैं। चिट्ठी अंग्रेजी में थी, यहां उसका अनुवाद दिया गया है–

" मेरठ आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव अभी मनाया गया है। उसमें अन्यान्य आर्यसमाज के सभासद् सम्मिलित थे। ऐसे समय महर्षि जी ने अपने व्याख्यान में सबके सामने ये विचित्र वचन कहे कि जब किसी अन्य सभा-समाज के सभ्य आर्यसमाजियों को अपनी सभा में भरती होने के लिए प्रेरणा करें तो उन्हें यह उत्तर देना चाहिए कि यदि आपकी सभा के नियम और उद्देश्य आर्यसमाज से मिलते हैं तो उसमें सम्मिलित होने से कोई लाभ नहीं है। यदि वे कहें कि हमारे नियम आर्यसमाज के नियमों से भिन्न हैं तो आर्यसमाजियों को उत्तर देना चाहिए कि आर्यसमाज के नियम अखंडित हैं। जिस सभा के नियम खण्डित हैं, उसमें मिल जाने की हमें आवश्यकता नहीं है।

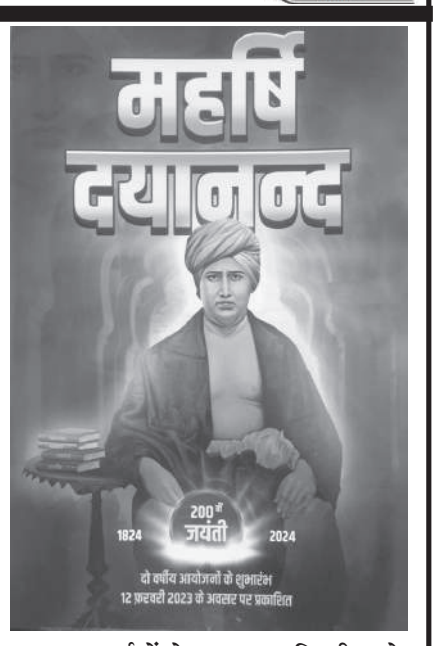

यथार्थ में रोम का अभ्रान्तिशील पोप इससे अधिक और क्या कह सकता है? महर्षि जी गर्वित ब्राह्मणों के दावों के विरोधी हैं। उनके कहने का यह तात्पर्य कदापि न होगा। उन्होंने यह भी कहा कि 'अन्य देशियों के समाज में वैसा मित्रभाव और स्नेह नहीं हो सकता, जैसा कि एक ही मत और देश के आर्यसभासदों में होता है' हमने आपके बिना किसी भी आर्यसमाजी को अपनी सभा में मिलाने का यत्न नहीं किया।

–क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

Those leaders of Theosophy, whose doctrines appeared to be very favorable to Arya Samaj, soon started denying God and Arya Samaj, the creator of the world, and enrolled themselves in Buddhism. In America, only the spirit of King John used to enter Madame Blavatsky, but as soon as she came to India, she was introduced to the Himalayan Mahatma and his representative, Mahatma Koot humi, and messages started reaching directly from theHimalayas.

The biggest reason that caused the difference was that the founders of Theosophy began to accept and proclaim miracles as a principle of their religion. They used to call miracles by the name of Yogasiddhi without Yoga. The achievements were also strange. They gave the address of someone's missing thing, guessed to understand someone's heart. Such were the miracles, by showing which Theosophy wanted to spread reverence for Yoga in the hearts of people. Two examples of the miracles of theosophy are being given at that time, looking at them it will be clear why the ideas of the founder of Aryasamaj could not be found in the ideas of theosophy. Madame Blavatsky was in Simla. Some persons were invited to the house of the famous Mr. Eau Hume. Madame Blavatsky was also among them. After the meal, the matter arose that Madam should show some spiritual miracle. Madam got ready. She asked the family members whether any of their things had gone missing. The reply revealed that a few days ago, a piece of jewelery had gone missing from Mr Hume's house. Madam meditated for some time and informed about the place in the garden where the missing object was buried. The object was found, and the fame of the miracle spread across the globe.

A few days back, letters were published in English Man, Bombay Gazette, Times of India and Civil Military Gazette, which exposed the mystery. An English youth went from Shimla to Bombay, and met Madam there. In Shimla he used to visit Mr. Hume a lot. Mr. Hormusji Seerabai of Bombay testified that Madam Blavatsky got the jewel repaired by her exactly as it had been miraculously found. It is not difficult to solve the mystery and make it a historical event. The jewel was stolen from Mr. Hume's house. After getting it repaired in Bombay, Madam took it to Shimla with her and proved the truth of Theosophy by showing miracles.

The second incident took place in Lahore. In the month of April 1883, a disciple of the Mahatmas of Theosophy reached Lahore. Madame Blavatsky's disciple and announced that he would perform miracles. He will put forward his finger. First of all, no one will be able to cut his finger, even if it is cut, it will join immediately. The miracle was announced in the full assembly. At first no Hindu's heart was ready for such a harsh task, but when it was too late, and the kindness of the people was taken to mean that no one raised his hand due to the disciple's power, then a Sikh soldier courageously raised his hand and cut of his finger. The poor disciple got confused. He could not join of the finger. The poor man was suffering for many days and kept chanting the names of the Mahatmas.

How could Rishi, the founder of Arya Samaj, remain silent after hearing such incidents! He was the enemy of arrogance and deceit. He did not believe in reconciliation in religion. As a result, Swami ji started getting disgusted at the untruthful behavior of the founders of Theosophy. On the other hand, by giving another opportunity to trap the foolish public, that couple also started thinking of a way to deny the discipleship of Swami ji.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

मुफ्तवाद, शराब और पैसा क्या .....

में चुनकर जाते हैं, जिनको यह पता नहीं कि आज सदन के पटल पर कौन दस्तावेज रखा गया है, किस बात पर चर्चा होनी है।

उन्हें केवल पता है कि हमारा नेता बोलता है, तो हमें जिंदाबाद कहना है और हमारा नेता यदि किसी का विरोध करता है तो मुझे सिर्फ हल्ला करना है, मुर्दाबाद बोलना है। ऐसे लोगों से आप क्या उम्मीद कर सकते हैं कि ये संसद में कानून बना पाएंगे ?

लोकतंत्र में चुनाव ही महत्वपूर्ण है, जिसके लिए हर पार्टी साम, दाम, अर्थ आदि सभी लगाती है, क्योंकि अब तो आम धारणा बन चुकी है कि देश सेवा के लिए संसद, विधानसभा के लिए चुने जाना ही लक्ष्य है, क्योंकि यह एक आसान उपाय है। अब पार्टियां बहुमत के लिए प्रयत्न करती हैं, बड़ी से बड़ी सिद्धांतवादी पार्टी भी अपने सिद्धांत किनारे रख बाहुबलियों को आसानी से टिकट दे देती है। वैसे भी चुनावों में पैसे तथा प्रभाव का महत्व होता है। बाहुबली के पास दोनों ही, पैसा एवं प्रभाव, होते हैं, जिसके कारण एक आम उम्मीदवार की अपेक्षा उसके जीतने की संभावना प्रबल होती है। इसका बड़ा अच्छा उदाहरण सपा द्वारा दस्यु सुंदरी फूलन देवी को सांसद बनाया जाना है। अब ऐसे जनप्रतिनिधियों से भी पार्टियों को एतराज नहीं रहता। वैसे भी सभी पार्टियों में दागी सांसदों की भरमार है, लेकिन दोष न सिद्ध होने तक कोई दोषी नहीं होता। इसकी आड़ लेकर यह चलता है। दूसरा, बाहुबली उम्मीदवार पैसे एवं बल में प्रभावी होने के कारण आसानी से टिकट पा जाता है और एक बार जनप्रतिनिधि हो जाने पर सर्वमान्य हो जाता है। वैसे भी कई ऐसे उदाहरण हैं, कई बार दल बदलने के पश्चात उसकी पार्टी वाले उसे बाहुबली कई उपमा नहीं देते हैं।

इसके अलावा देखें तो जैसा अब चुनाव आयोग ने कहा है कि भारतीय चुनावों में बेहिसाब पैसा खर्च किया जाता है। चुनाव आयोग ने चुनाव प्रचार के लिए सिर्फ 50 70 लाख तक की सीमा रखी है, लेकिन भारत की राजनीतिक पार्टियां बेहिसाब पैसा खर्च करती हैं। पता सबको है, इस बारे में लेकिन कोई कुछ बोलता नहीं है। इतना पैसा आता कहां से है? इन सब हालात को देखकर लगता है भारत देश गरीब नहीं है, इसे गरीब बनाया जा रहा है, क्योंकि जिस तरह पैसा पानी की तरह बह रहा है, अगर वही पैसा सही जगह लगाया जाए, तो कोई भूखा पेट नहीं सोएगा, कोई बारिश में एक छत को नहीं ढूंढेगा, अपना वोट सही व्यक्ति को दे, चाहे वो किसी भी पार्टी का हो, लेकिन वोट जरूर दे। **-संपादक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

रविवार, 9 फरवरी 2025, प्रात: 11 बजे से
स्थान : आर्य समाज देव नगर, करोलबाग, नई दिल्ली 05

अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण
पंजीकरण करवाने की अंतिम तिथि 3 फरवरी 2025
तभी पुस्तिका में विवरण प्रकाशित होगा
bit.ly/parichay2024
अथवा
QR कोड स्कैन करें

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : 9311721172

नोट : विधवा-विधुर, तलाकशुदा, विकलांग तथा 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के युवक युवतियों के लिए विशेष सुविधा

गुरुकुल संचालन हेतु सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता

पं॰ लेखराम स्मारक ट्रस्ट, कादियां, पंजाब ने गुरुकुलीय परंपरा से पठित, धार्मिक, संस्कारी, विद्वान् युवाओं के निर्माण हेतु बालकों का लघु गुरुकुल प्रारंभ किया गया है। यह गुरुकुल न्यास के परिसर में ही संचालित होगा। इसके संचालन हेतु एक **सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है**, गुरुकुल संचालन में आचार्य की स्वतंत्रता रहेगी। आवास आदि की व्यवस्था के साथ उचित मानदेय भी दिया जाएगा। **अपेक्षाएं** - 1. आचार्य वैदिक परंपरा से संचालित किसी प्रतिष्ठित गुरुकुल के स्नातक होने चाहिए। 2. अनुभवी आचार्य को प्राथमिकता दी जाएगी।

इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि कृपया अतिशीघ्र संपर्क कर गुरुकुल संचालन में हमारा सहयोग करें। अधिक जानकारी के लिए 9814262574 से सम्पर्क करें। - ***अरुण अबरोल***

विश्वभर में आर्यसमाज की लहराती पताकाओं को दर्शाता
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित
आर्यसमाजें अधिकाधिक सख्या में अपने नाम से छपवाकर प्रचार करें

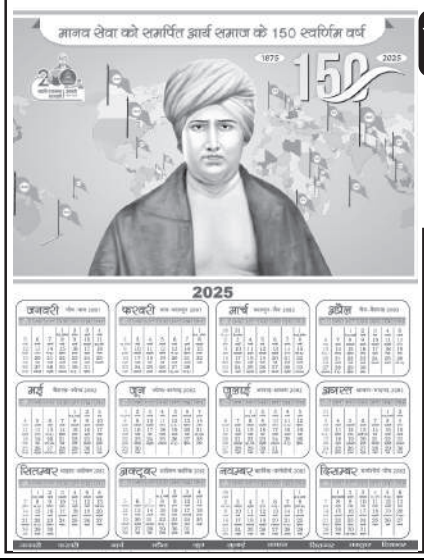

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com

150वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह, मुम्बई | **29-30 मार्च, 2025 (शनि-रविवार) :** | **सिडको कन्वैंशन सैन्टर, वाशी, नई मुम्बई**

विशेष अनुरोध

★ समस्त भारत की आर्यसमाजें एवं आर्य संगठन अपने साप्ताहिक सत्संगों में 150वें स्थापना दिवस समारोह की सूचना अवश्य दें और अधिकाधिक संख्या में सपरिवार पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करें।

★ उपरोक्त तिथियों में अपना बड़ा एवं विशेष कार्यक्रम न रखें।

★ इस ऐतिहासिक समारोह में समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य संगठनों के अधिकारी, संन्यासी, विद्वान एवं सदस्य तथा कार्यकर्ता अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

★ पंजीकरण अनिवार्य है - www.aryasamajmumbai150years.com/ पर सभी पंजीकरण अवश्य कराएं।

★ आपकी आर्यसमाज/संस्था की ओर से जो महानुभाव समारोह में सम्मिलित होना चाहते हैं, कृपया उनके नाम, पते एवं मोबाइल नं. की सूची प्रान्तीय सभा के माध्यम से प्रेषित करें, ताकि तद्नुसार व्यवस्थाएं की जा सकें।

★ इच्छुक महानुभाव 28 मार्च को मुम्बई पहुंचने के हिसाब से टिकटें करवाएं - रेलवे आरक्षण 27 जनवरी से प्रारम्भ हैं।

★ समारोह में पधारने वाले समस्त आर्यजनों के लिए आर्यसमाजों, संस्थाओं, साधारण होटल, 2-3-4 स्टार होटलों में सशुल्क व्यवस्था की गई है।

★ मुम्बई भ्रमण एवं आवास व्यवस्था के लिए सिल्वर, गोल्ड एवं प्लैटिनम पैकेज बनाए गए हैं।

★ आप स्वयं अपनी सुविधा/आवश्यकता अनुसार सम्मेलन स्थल के निकट उपलब्ध होटल बुक कर सकते हैं। सूची वैबसाइट पर उपलब्ध है।

★ मुम्बई में समारोह, आवास, भोजन व्यवस्था अथवा भ्रमण पैकेज सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु 8422891578/9152137937 से सम्पर्क करें help@aryasamajmumbai150years पर ईमेल करें या लॉगइन करें www.aryasamajmumbai150years.com

निवेदक :- ★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ★ आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 03 फरवरी, 2025 से रविवार 09 फरवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 06-07-08/02/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 05 फरवरी, 2025

ओ३म्

150वां आर्य समाज स्थापना दिवस, मुंबई

29-30 मार्च 2025, स्थान: सिड्को, वाशी, मुंबई

प्रतिष्ठा में,

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति की बैठक 1 फरवरी, 2025 के निर्णयानुसार मुम्बई यात्रा का विवरण

यात्रा एवं कार्यक्रम : 27 मार्च से 1 अप्रैल, 2025

कृपया अपने रेल/विमान की टिकटें जल्दी कराएं

रेलवे यात्रा : 27 मार्च 2025 : प्रस्थान - नई दिल्ली
28 मार्च 2025 : प्रात: मुंबई पहुँचना एवं भ्रमण
29-30 मार्च 2025 : कार्यक्रम में भागीदारी
31 मार्च 2025 : भ्रमण एवं प्रस्थान - सायं एवं रात्रि मुंबई से
1 अप्रैल 2025 : वापसी दिल्ली पहुँचना

हवाई यात्रा : 28 मार्च 2025 : प्रात: दिल्ली से प्रस्थान मुंबई पहुँचना एवं भ्रमण
29-30 मार्च 2025 : कार्यक्रम में भागीदारी
31 मार्च 2025 : भ्रमण एवं प्रस्थान - सायं, रात्रि मुंबई से
: तथा दिल्ली पहुँचना

★ रेल/हवाई यात्रा/भ्रमण में रास्ते की सभी व्यवस्थाएं सदस्य को स्वयं करनी होगी।
★ मुंबई पहुंचने पर आवास (दो सदस्यों की भागीदारी में), भोजन तथा भ्रमण की व्यवस्था रहेगी।
★ सदस्य शीघ्र अति शीघ्र पंजीकरण तथा राशी जमा करवाएं। वरना रेलवे टिकट नही मिलेगी लिंक अथवा QR कोड स्कैन करें।
★ रेल बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र : 9811227215
★ विमान बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र : 9831067332

bit.ly/150sthapnadiwas

★ बुकिंग कैंसिल होने पर पैसा वापिस नहीं किया जायेगा।
★

रेल यात्रा	रेल टिकट	आवास व्यय	भ्रमण इत्यादि	कुल व्यय
साधारण स्लीपर	1500	2000 (धर्मशाला, भवन)	2000	5500
गरीब रथ एसी	2500	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	10550
3 एसी	5300	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	13300
2 एसी	7200	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	15200
हवाई यात्रा	सुविधानुसार	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	8000

★ आवास एवं भ्रमण हेतु संपर्क सूत्र : 9811129892 (प्रात: 10-1 बजे/सायं 4-7 बजे)

निवेदक :- ★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ★ आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह